पूर्वाह्न 11.06 बजे

[अनुवाद]

आयकर (संशोधन) दूसरा अध्यादेश के बारे में एक व्याख्यात्मक विवरण

वित्त मंत्री (श्री यशवंत सिन्हा): मैं आयकर (संशोधन) दूसरा अध्यादेश, 1997 द्वारा तुरन्त विधान बनाए जाने के कारणों को दर्शाने वाला एक व्याख्यात्मक विवरण (हिन्दी तथा अंग्रेजी संस्करण) सभा पटल पर रखता हूं।

[ग्रंथालय में रखा गया। देखिये संख्या एल.टी. 46/98]

पूर्वाह्न 11.06½ बजे

मंत्रि-परिषद में विश्वास का प्रस्ताव

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं:

"कि यह सभा मंत्रि-परिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है।"

अध्यक्ष महोदय, यह प्रस्ताव पेश करते हुए मेरे हृदय में मिली-जुली भावनाएं हैं। बरबस मेरा ध्यान 28 मई, 1996 की ओर जाता है। उस दिन, इसी सदन में, इसी स्थान से, मैंने उस समय की अपनी सरकार के लिए विश्वास मत की मांग की थी। तब से लेकर नदियों में बहुत सा पानी बह गया है। लोक तंत्र की सरिता अबाध गति से बहती रहे, यह आवश्यक है। लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता है कि वह सरिता अविश्वास के भंवर में फंसकर अपना प्रवाह खो रही है। तब मैंने त्याग-पत्र दे दिया क्योंकि मैं अल्पमत में था और अम्पायर मुझे कहते कि आप मैदान से बाहर चले जाइए, उससे पहले ही मैंने मैदान छोड़ दिया । लेकिन उसके बाद जो घटनाचक्र चला, उस पर इस देश को गंभीरता से विचार करना होगा। 1989 से विश्वास मत के भंवर में पड़े हुए लोक तंत्र का चित्र हमें चिंता पैदा करता है।

21 दिसम्बर 1989 को फिर विश्वास मत हुआ था। सरकार केवल ग्यारह महीने चली। 7 नवम्बर 1990 को पुनः विश्वास मत हुआ। 1990 में नए प्रधान मंत्री ने विश्वास मत लिया किंतु पांच वर्ष सरकार चलने की बजाए पांच महीने सरकार चली। लोक सभा भंग हो गई। 1991 के चुनाव में किसी को बहुमत नहीं मिला। कांग्रेस की अल्पमत की सरकार बनी। प्रारम्भ में हमने उसे सहयोग दिया। बाद में वह अल्पमत में कैसे बदला, इस कहानी में मैं जाना नहीं चाहता। मामला अदालत में है। वह सरकार अस्थिरता के भंवर में तो नहीं थी, लेकिन इस सरकार की नाव को भ्रष्टाचार के मगरमच्छों ने क्षत-विक्षत कर दिया। इसीलिए कांग्रेस चुनाव में हारी। कांग्रेस की ऐसी पराजय पहले कभी नहीं हुई थी। 1977 में इमरजेंसी के अपराधों के कारण कांग्रेस को सत्ता से हाथ धोना पड़ा था, फिर भी कांग्रेस सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी। लेकिन उस समय सबसे बड़ा दल होने का स्थान कांग्रेस ने खो दिया। भारतीय जनता पार्टी बढ़ते हुए जन-विश्वास के आधार पर सबसे बड़े दल का दर्जा प्राप्त करने में सफल हुई। लेकिन चुनाव में कांग्रेस की पराजय के बाद फिर एक अस्थिरता का दौर चला। संख्या कम होने के कारण हमने अपने आप को अलग कर लिया। लेकिन 28 मई को इस सदन में भाषण करते हुए मैंने कहा था कि जनता का विश्वास प्राप्त करके हम पुनः आयेंगे और आज हम फिर यहां उपस्थित हैं।..... *(व्यवधान)* उस समय की परिस्थिति में और आज की परिस्थिति में जमीन आसमान का अन्तर है। इस बीच अस्पृश्यता की राजनीति विफल हो गई और अलग-अलग करने के प्रयासों पर पानी फिर गया। हम सबसे बड़े दल के रूप में उभरे हैं और अपने मित्र दलों के सहयोग से हम सबसे बड़े गठबंधन के रूप में उभरे हैं।..... *(व्यवधान)* बहुमत से थोड़ा कम हैं। हमने इस बात पर पर्दा नहीं डाला। हम राष्ट्रपति जी के पास दावा पेश करने के लिए नहीं गए। राष्ट्रपति महोदय ने हमें स्वयं विचार-विमर्श के लिए बुलाया और हमने उनसे कहा कि संख्या थोड़ी कम है। उन्होंने कहा - मैं और दलों से विचार-विमर्श करूंगा और उन्होंने विचार-विमर्श किया। हमारे साथ जो दल थे, जिन दलों के समर्थन का हम दावा कर रहे थे, उनके बारे में राष्ट्रपति महोदय ने दस्तावेज मांगे। अलग-अलग बातें की। तेलगू देशम के नेताओं से उनकी चर्चा हुई और वे इस परिणाम पर पहुंचे। कांग्रेस पार्टी ने सरकार बनाने का दावा नहीं किया। कांग्रेस की अध्यक्षा और कांग्रेस के संसदीय दल की नेत्री, श्रीमती सोनिया गांधी, भी राष्ट्रपति जी से मिलने गई थी और श्रीमती सोनिया गांधी ने उनसे कहा कि हम दावा नहीं कर रहे हैं। संयुक्त मोर्चा दावा करता, इसका तो सवाल ही नहीं था। चुनाव में सबसे ज्यादा चोट उन्हें ही लगी है।

कांग्रेस का भी एक सदस्य बढ़ा है। संयुक्त मोर्चा की संख्या तो आधी रह गयी है। उन्होंने भी कहा है कि हम सरकार बनाने में रुचि नहीं रखते। तब राष्ट्रपति महोदय ने मुझे सरकार बनाने के लिए कहा। एक समय-सीमा निर्धारित की और वह समय-सीमा 29 तारीख को समाप्त हो रही है। मैं विश्वास का मत प्राप्त करने के लिए आपके सामने खड़ा हूं।

मैं सदन के सामने इस बात को रखना चाहता हूं कि विश्वास मत प्राप्त करने का सिलसिला एक वर्ष के बाद दूसरे वर्ष, तीसरे वर्ष, ये कब तक चलेगा। विश्वास का मत मुझे प्राप्त करना है इसलिए मैं यह प्रश्न खड़ा कर रहा हूं ऐसी बात नहीं है। आज हर देशवासी के मन में, हर लोकतंत्र प्रेमी के मन में यह सवाल उठ रहा होगा और उठना भी चाहिए कि आखिर देश राजनीतिक अस्थिरता के भंवर में क्यों फंस गया है? जैसा मैंने कहा, यह सिलसिला बंद होना चाहिए। हम आशा करते थे कि चुनाव के बाद दो-टूक फैसला होगा। यह ठीक है कि आज यदि जनादेश किसी के पक्ष में है तो वह भारतीय जनता पार्टी और उसके मित्र दलों के पक्ष में है। कांग्रेस और संयुक्त मोर्चा के पक्ष में तो बिल्कुल नहीं है।.....*(व्यवधान)* हमारे विरोधी दल आपस में भी लड़कर

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

आए थे। इसलिए मैंने राष्ट्रपति महोदय से कहा था कि आप और दलों को बुलाकर पूछ लीजिए। जिम्मेदारी लेने से पहले हम चाहते हैं कि और दलों को आप मौका दें। कोई सरकार बनाने के लिए तैयार नहीं था। आज मैं फिर उस बात को दोहराता हूं। अगर हमारे विरुद्ध सब दल इकट्ठे होते हैं, और स्थिर सरकार देने में सफल होते हैं तो आगे आएं। इकट्ठे तो पिछली बार भी हो गये थे। कांग्रेस पार्टी बाहर से समर्थन दे रही थी। कुछ महीने समर्थन दिया और फिर समर्थन वापिस ले लिया और देवगौड़ा जी मुश्किल में फंस गये। ..... *(व्यवधान)* उनके ऊपर यह आरोप लगाया गया कि वह कांग्रेस पार्टी को तोड़ना चाहते थे। मैं नहीं जानता कि इसमें सच्चाई क्या है? फिर मेरे मित्र श्री इंद्र कुमार गुजराल प्रधान मंत्री बने और कांग्रेस पार्टी ने थोड़े महीने बाद फिर समर्थन वापिस ले लिया। अब कांग्रेस पर भरोसा कौन करेगा? लेकिन अब अगर नये विश्वास की सृष्टि हुई है और कुछ नयी शुरूआत की आकांक्षा है तो मैं कहूंगा कि देश को स्थिर सरकार की आवश्यकता है, ईमानदार सरकार की आवश्यकता है और इस आवश्यकता को, इस सरकार की आवश्यकता को हम पूरा करेंगे।.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्रपति जी ने जब हमें बुलाया तो उनके सामने दो कसौटियां थीं।

उन्होंने दो बातों पर गम्भीरता से विचार किया - एक भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़े दल के रूप में उभरी थी और दूसरा भारतीय जनता पार्टी और मित्र दलों का गठबंधन सबसे शक्तिशाली गठबंधन था, लेकिन एक और विशेषता थी कि यह गठबंधन चुनाव के पूर्व हुआ था, चुनाव के बाद नहीं। हम इस गठबंधन को लेकर मतदाता के पास गए थे। चुनाव के पूर्व जो गठबंधन होते हैं, उनमें विचारों की समानता होती है। इसलिए राष्ट्रपति महोदय ने चुनाव के पूर्व गठबंधन के तथ्य को अधिमान दिया और हमें सरकार बनाने के लिए बुलाया। चुनाव में हम जनता के सामने दो प्रमुख लक्ष्य लेकर गए थे - एक देश को राजनैतिक स्थिरता देना और दूसरा देश को स्वच्छ शासन और प्रशासन देना। यह गठबंधन चुनाव के पूर्व था, इसलिए यह कहना गलत होगा कि यह गठबंधन केवल सत्ता के लिए था। लोकतंत्र में सत्ता में भागीदारी स्वाभाविक है, आवश्यक है, लेकिन चुनाव पूर्व गठबंधन में और चुनाव के बाद के गठबंधन में जो गुणात्मक परिवर्तन है, उसको समझा जाना चाहिए। राष्ट्रपति महोदय ने समझा और उन्होंने हमें सरकार बनाने के लिए बुलाया।

अध्यक्ष महोदय, जिस तरह के चुनाव परिणाम आए हैं, उनका मैं संक्षेप में उल्लेख करना चाहता हूं। तमिलनाडु में सुश्री जयललिता के नेतृत्व में ए.आई.ए.डी.एम.के. की वापसी ने चुनाव दृश्य के पर्यवेक्षकों को आश्चर्य में डाल दिया। कर्नाटक में श्री हेगड़े के नेतृत्व में लोक शक्ति के साथ हमारा गठबंधन परिणाम लाया है। उड़ीसा में अजेय बीजू बाबू के सुपुत्र श्री नवीन पटनायक ने बीजू जनता दल का उदय करके राजनीति की तस्वीर ही बदल दी। पश्चिम बंगाल में ममता जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने कांग्रेस तथा मार्क्सवादी दलों को मूल से हिला दिया।....*(व्यवधान)*

श्री सत्यपाल जैन (चंडीगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आप माननीय सदस्यों से कहिए कि वे टोका-टाकी न करें, नहीं तो हम भी इनके लीडर्स को बोलने नहीं देंगे। इसके बाद शरद पवार जी ने बोलना है.....*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छा नहीं है।

....*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : गुजरात में सिद्धान्तहीन गठबंधन परास्त हुआ और जनता ने पुनः हमें अपना विश्वास दिया। कुछ प्रदेशों में हमें अपेक्षा के अनुसार सफलता नहीं मिली। हम असफलता के कारणों पर गहराई से विचार कर रहे हैं। कुछ दलों के साथ हमारा गठबंधन इस चुनाव को लेकर ही नहीं हुआ, इससे पहले भी हम उनके साथ मिल कर काम करते रहे हैं, सरकार चलाते रहे हैं, अकाली दल और भारतीय जनता पार्टी का गठबंधन केवल सत्ता के बंटवारे के लिए नहीं है, पंजाब में सैकड़ों साल से हिन्दू और सिखों के बीच में जो भाईचारा चला आ रहा है, उसे मजबूत करने के लिए है।

अब पंजाब में सरसों की पीली फसल के ऊपर रक्त के लाल धब्बे नहीं दिखाई देंगे। पंजाब की शामों में गिद्धा सुनाई देता है। अभी बैसाखी का त्यौहार आ रहा है। पूरा पंजाब मस्ती में झूमेगा। ...*(व्यवधान)* पंजाब में आतंकवाद को परास्त करने का कांग्रेस श्रेय लेती है, लेकिन जनता इस दावे को स्वीकार नहीं करती। अगर स्वीकार करती तो पंजाब में कांग्रेस की पराजय क्यों होती? हिमाचल प्रदेश में हिमाचल विकास कांग्रेस के साथ हम मिलकर काम कर रहे हैं।....*(व्यवधान)* हरियाणा में भारतीय जनता पार्टी और हरियाणा विकास पार्टी की मिली-जुली सरकार चल रही है। अब हरियाणा और पंजाब के बीच में पारस्परिक सहयोग की चर्चा होती है, विवाद के मसले नहीं उठाए जा रहे। जहां-जहां हमारी सरकारें हैं भारतीय जनता पार्टी की, वहां बारूद बंद कर दी गई है। लेकिन जनता की मांग पर उस पर पुनर्विचार किया जा रहा है, क्योंकि लोकतंत्रात्मक सरकार है। और प्रदेशों में भी यह बारूबंदी का प्रयोग कई रूपों में से निकला है। लोग एक प्रयोग करते हैं, फिर उससे सीखते हैं, फिर दूसरी नीति बनाते हैं। लेकिन जो कठिनाइयां उत्पन्न होती हैं उनका विचार करके सरकार अगर नीति में परिवर्तन करे तो फिर उसे उसके लिए श्रेय दिया जाना चाहिए। मुझे विश्वास है भजन लाल जी जरूर इसके लिए वाहवाही कर रहे होंगे।

अध्यक्ष महोदय, जैसा मैं स्पष्ट कर चुका हूं कि बहुमत प्राप्त करने में कमी रहने के कारण हमने सरकार बनाने का दावा नहीं किया था, लेकिन आज हम सदन में बहुमत में हैं और अपना बहुमत सिद्ध करेंगे। लेकिन मैं फिर इस बात को दोहराना चाहता हूं कि बहुमत और अल्पमत, ये लोकतंत्र के लिए आवश्यक हैं लेकिन क्या लोकतंत्रीय पद्धति बहुमत और अल्पमत के खेल में अटककर रह जाएगी? क्या अस्थिरता का कभी समाप्त न होने वाला दौर चलता रहेगा? पिछले 18 महीने की अनिश्चितता ने, अस्थिरता ने किस तरह से देश को कठिनाइयों में डाला है, विशेषकर आर्थिक मोर्चे पर, उसका उल्लेख मेरे सहयोगी वित्त मंत्री श्री यशवन्त सिन्हा

कर चुके हैं। उन्होंने स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है। स्थिति चिन्ताजनक है। 18 महीने की अनिश्चतता के कारण, अदूरदर्शी नीतियों के कारण अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई है। खाद्यान्न का उत्पादन घटा है, निर्यात घटा है, सरकारी आमदनी घटी है, वित्तीय घाटा बढ़ा है। इसे रोकने के उपाय करने पड़ेंगे। उसके लिए केन्द्र में स्थिर, सक्षम और ईमानदार सरकार की जरूरत है। अगली शताब्दी की चुनौतियों का सबको सामना करना होगा।

यह अकेले एक दल का या अनेक दलों के गठबंधन का सवाल नहीं है। आप जब इधर थे तब आपकी कठिनाइयां हम देख रहे थे और जब-जब उन कठिनाइयों से निकलने के लिए हमारी सहायता की आवश्यकता हुई, हमने कभी इन्कार नहीं किया, हमने कभी अस्वीकार नहीं किया। आखिर दल देश के लिए है, राष्ट्र सर्वोपरि है, भारत संसार का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन राजनीतिक अस्थिरता न केवल हमारी अर्थव्यवस्था को आहत कर रही है बल्कि सबसे बड़े लोकतंत्र के नाते वह विश्व में हमारी छवि को भी धूमिल कर रही है।

राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण के माध्यम से मैंने अपनी सरकार की प्राथमिकताओं और उसकी नीतियों पर प्रकाश डाला है। राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण से अगर किसी का मतभेद है तो वह मतभेद कहां है और क्यों है, इस पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं। हमारा कार्यक्रम राष्ट्र के सर्वांगीण विकास का कार्यक्रम है। यह सर्वस्पर्शी कार्यक्रम है। यह देश के सभी भागों और समाज के सभी अंगों के उत्थान के लिए है। इसीलिए हमने इसे न्यूनतम कार्यक्रम नहीं कहा। हमने इसे राष्ट्रीय एजेंडा का नाम दिया है। हम चाहेंगे कि वह गम्भीर चर्चा का विषय बने। इस एजेंडे में हम जनआकांक्षाओं और सरकार की करनी के बीच जो फासला बढ़ा है, उसे कम करना चाहते हैं। भारत एक बहुबलीय लोकतंत्र है, हमें इस पर गर्व है और हम लोकतंत्र की इस विशेषता को वर्धमान करने के लिए कटिबद्ध हैं। स्वाधीनता के बाद ऐतिहासिक कारणों से केन्द्र में और राज्यों में भी एक दल का वर्चस्व रहा, जिसके कारण अनेक विकृतियां आईं। कुछ लाभ भी हुए थे। लेकिन स्थिति यहां तक बिगड़ गई कि मुख्य मंत्री केन्द्र से नामजद होने लगे। प्रदेशों की स्वायत्तता व्यवहार में घटने लगी। क्षेत्रीय अपेक्षा और आवश्यकताओं के प्रकटीकरण का उचित माध्यम नहीं मिला। आज यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि अलग-अलग क्षेत्रों में क्षेत्रीय दल सत्ता की बागडोर संभाल रहे हैं और राष्ट्र के विकास में अखिल भारतीय दृष्टिकोण विकसित करते हुए योगदान दे रहे हैं। ये सब हमारी बधाई के अधिकारी हैं, हमारे अभिनंदन के अधिकारी हैं।

शक्तिशाली केन्द्र और शक्तिशाली राज्य इनमें कोई अंतरविरोध नहीं है। हम चाहेंगे कि राज्यों को और अधिक स्वायत्तता मिले। हम चाहेंगे कि मुख्य मंत्री छोटी सी बात के लिए, थोड़ा सा अनुदान लेने के लिए, छोटी सी योजना पूरी कराने के लिए नई दिल्ली तक दौड़ लगाने का सिलसिला बंद कर दे। साधनों का बंटवारा इस तरह से होना चाहिए कि राज्य अपने पैरों पर खड़े हो सकें, विकास की जिम्मेवारियां निभा सकें। मित्रों इसके लिए राजनीति में जो नकारात्मकता आ गई है, जो एक छुआछूत की भावना आ गई है, उसे दूर करने की जरूरत है। पिछली बार केवल भारतीय जनता पार्टी को सत्ता से अलग रखने के लिए जो गठबंधन बना, वह गठबंधन टूट गया, बिखर गया।

अध्यक्ष महोदय, देश के सामने नए चुनाव की चुनौती आ गई। अब क्या फिर वही परिदृश्य दोहराया जाएगा ? पुराने राजनीतिक दल पहले जहां खड़े थे, भले ही वे वहां खड़े हों, लेकिन जनता आगे बढ़ गई और हमारे साथ काम करने वालों की संख्या भी निरंतर आगे बढ़ रही है। आज सारे देश का प्रतिनिधित्व इधर है। हम समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलना चाहते हैं। देश में अनेक विभिन्नताएं हैं। बहुबलीय होने के साथ-साथ यह देश बहुभाषी और बहुधर्मी भी है। इस देश में अलग-अलग जनजातियों का निवास है। वे संख्या में कम हैं, इसलिए अपने अस्तित्व के बारे में चिन्तित हैं।

कभी-कभी उत्तर पूर्व में बसे हुए लोग न केवल भौगोलिक दूरी अनुभव करते हैं, बल्कि भावनात्मक दृष्टि से भी अपने को उपेक्षित पाते हैं। इस स्थिति को बदलना पड़ेगा और हम बदलने के लिए कटिबद्ध हैं। लेकिन यह काम आम सहमति के आधार पर ज्यादा अच्छी तरह हो सकता है, केवल सरकार के भरोसे नहीं। विविधता हमारी संस्कृति की समृद्धि का परिचायक है, हमारी दुर्बलता की देन नहीं। सभी भाषाओं के साहित्य का अध्ययन कीजिए, तो उनमें कहीं न कहीं एक स्वर की झनक सुनाई देती है। एक झलक दिखाई देती है। अनेक कारणों से जो संख्या में कम हैं भाषा के कारण, धर्म के कारण आशंकाएं पैदा होती हैं। हम उन आशंकाओं से परिचित हैं और उन आशंकाओं के निराकरण के लिए पूरी कोशिश करेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर मैं अधिक विस्तार से नहीं बोलना चाहता। अनेक मसले हैं जिन पर चर्चा होगी। मुझे उत्तर में अपनी बात कहने का मौका मिलेगा। कुछ प्रश्नों पर इस देश में हमेशा आम सहमति रही है और व्यापक आम सहमति रही है। मैं खासतौर से विदेश नीति के क्षेत्र का उल्लेख करना चाहूंगा। जब जेनेवा में मानवाधिकारों के सम्मेलन में कश्मीर के सवाल को हमारे पड़ौसी देश ने उठाने का फैसला किया, तो उस समय के प्रधान मंत्री श्री नरसिंहराव की नजर मेरे ऊपर गई कि मैं वहां जाकर भारत का प्रतिनिधित्व करूं। इस पर हमारे पड़ौसी देश के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, वहां के नेताओं को बड़ा ताज्जुब हुआ। किसी नेता ने कहा भी कि भारत का लोकतंत्र बड़ा विचित्र लोकतंत्र है कि प्रतिपक्ष का नेता अपनी सरकार के पक्ष को रखने के लिए जेनेवा जाता है और एक हमारा प्रतिपक्ष का नेता है जो देश के अन्दर ही ऐसी कठिनाइयां पैदा करता है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

लोगों ने कहा कि नरसिंह राव जी सरल आदमी नहीं हैं, बड़े चतुर आदमी हैं। यह मत समझिए कि वे केवल देश की एकता का प्रदर्शन करने के लिए आपको भेज रहे हैं बल्कि उनके मन में यह भी हो सकता है कि अगर जेनेवा में बात नहीं बनी और हमारे खिलाफ प्रस्ताव पास हो गया तो देश में हिंसा बंटाने के लिए

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

वाजपेयी जी को भी बलि का बकरा बनाया जा सकता है। मैंने इस पर विश्वास नहीं किया। हम एक दूसरे की सदाशयता पर भरोसा करते हैं।

मेरे मित्र श्री गुजराल यहां बैठे हैं। जब मैं थोड़ी देर के लिए विदेश मंत्री बना था तब वे मास्को में हमारे राजदूत थे- हमारे मापने मेरे नहीं, देश के राजदूत थे। उस समय से हम एक दूसरे को जानते हैं। 1977 में भी एमरजेंसी के बाद, देश में एक परिवर्तन आया था, आमूल परिवर्तन आया था। बड़े-बड़े स्तम्भ ढह गये थे। तम्बू उखड़ गये थे। बरसों से सत्तारूढ़ दल लोगों का विश्वास खो चुका था। उस समय भी विदेश नीति आम सहमति के आधार पर चली थी।

मुझसे एक विदेशी राजनीतिज्ञ ने पूछा था कि विदेश मंत्री महोदय, आप जहां बैठते हैं, वहां क्या परिवर्तन हुआ है, साउथ ब्लाक में क्या परिवर्तन होने वाला है? मैंने कहा कि मंत्री बदल गया है और कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है। कांग्रेस के मित्र शायद भरोसा नहीं करेंगे। साउथ ब्लाक में नेहरू जी का एक चित्र लगा रहता था। मैं आते-जाते देखता था। नेहरू जी के साथ सदन में नोंक-झोंक भी हुआ करती थी। मैं नया था और पीछे बैठता था। कभी-कभी तो बोलने के लिए मुझे वाकआउट करना पड़ता था लेकिन धीरे-धीरे मैंने जगह बनाई। मैं आगे बढ़ा और जब मैं विदेश मंत्री बन गया, तो एक दिन मैंने देखा कि गलियारे में टंगा हुआ नेहरू जी का फोटो गायब है। मैंने कहा कि यह चित्र कहां गया? कोई उत्तर नहीं मिला। वह चित्र वहां फिर से लगा दिया गया। क्या इस भावना की कद्र है? क्या देश में यह भावना पनपे?

ऐसा नहीं है कि नेहरू जी से मेरे मतभेद नहीं थे। मतभेद चर्चा में गंभीर रूप से उभर कर सामने आते थे। मैंने एक बार पंडित जी से कह दिया कि आपका एक मिला-जुला व्यक्तित्व है और आप चर्चिल भी हैं, चेम्बरलिन भी हैं। वह नाराज नहीं हुए। शाम को किसी बैंक्वेट में मुलाकात हो गयी। उन्होंने कहा कि आज तो बड़ा जोरदार भाषण दिया और हंसते हुए चले गये। आजकल ऐसी आलोचना करना दुश्मनी को दावत देना है। लोग बोलना बंद कर देंगे। क्या एक राष्ट्र के नेता, हम आपस में मिलकर काम नहीं कर सकते? क्या एक राष्ट्र के नेता, हम सब आने वाले संकटों का सामना नहीं कर सकते?

एक शताब्दी खत्म हो रही है, दूसरी शताब्दी दरवाजे पर खड़ी है। अगर हमें छोड़कर आप कोई नया प्रयोग करना चाहते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी लेकिन हम जो प्रयोग कर रहे हैं, उस प्रयोग को आप सफल होने दें, यह मैं आपसे अनुरोध जरूर करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, इन शब्दों के साथ में अपना प्रस्तावित भाषण समाप्त करता हूं। चर्चा में जो मुद्दे उठाये जायेंगे, उनका मैं उत्तर के रूप में जवाब दूंगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ:

"कि यह सभा मंत्रिपरिषद में अपना विश्वास व्यक्त करती है"

[हिन्दी]

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष महोदय, सदन के सामने प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में जो प्रस्ताव लाया गया है, उस बारे में मैं सदन के सामने अपने विचार और भावना रखने के लिए खड़ा हुआ हूं। प्रधान मंत्री जी का वक्तव्य मैंने बड़ी शान्ति से सुना। मुझे एक बात माननी होगी कि भाषा की समृद्धि है। जहां तक मुद्दों की समृद्धि है, उस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता। सदन के सामने प्रधान मंत्री जी ने पहले कहा कि हमारे पास शुरू में बहुमत नहीं था, कुछ नम्बर कम थे। आज विश्वास दिलाया कि आज हम बहुमत में पहुंचे हैं कैसे पहुंचे, क्यों पहुंचे, इस पर मैं अभी बोलना नहीं चाहता हूं। मगर हमें यह देखना होगा कि देश की जनता ने इस समय जनादेश निश्चित रूप में क्या दिया। कितने प्रतिशत लोगों ने अटल जी को यह सरकार चलाने का अधिकार दिया। कई पोलीटिकल पार्टियों के गुटों को साथ लेकर उन्होंने चुनाव के पहले गठबंधन बनाया था, यह सब देशवासी जानते हैं। चुनाव के पहले गठबंधन और चुनाव के बाद के गठबंधन के बारे में उन्होंने अपनी भूमिका सदन के सामने रखी है। चुनाव के पहले जो गठबंधन होता है, उसे मैं जरूर महत्व देता हूं लेकिन चुनाव के पहले गठबंधन में लोगों के सामने जाते समय एक निश्चित कार्यक्रम लेकर जाना होता है, तो इस गठबंधन को महत्व देने की आवश्यकता है। भारतीय जनता पार्टी ने अपना घोषणा पत्र तय किया। जार्ज फर्नान्डीज साहब ने अपना घोषणा पत्र अलग से तैयार किया और उनके अन्य साथियों ने अपना घोषणा पत्र अलग तैयार किया। सभी घोषणा पत्रों को देखने के बाद आप इस राय पर आ गए कि जिस तरह से देश को चलाना चाहते थे, उसमें आज सरकार में शामिल होने वाली पार्टियों में भी अलग-अलग राय थी, अलग-अलग मुद्दे थे, अलग-अलग विचार और कार्यक्रम थे।

कांग्रेस ने अपना कार्यक्रम लोगों के सामने रखा था। युनाइटेड फ्रंट ने अपना कार्यक्रम लोगों के सामने रखा था। हमने मिलकर चुनाव नहीं लड़ा। लेकिन जब हमने युनाइटेड फ्रंट में शामिल होने वाली सभी पार्टियों की नीतियां देखीं, जो मुद्दे उन्होंने देशवासियों के सामने रखे, वे देखे तो पता लगा कि कांग्रेस और युनाइटेड फ्रंट के घोषणा पत्र में कई ऐसे समान कार्यक्रम हैं जिनके बारे में हम सदन में एकता से, एक विचार से बैठ सकते हैं, बोल सकते हैं, साथ काम कर सकते हैं। इसलिए हमें यह देखना होगा कि इस देश की जनता ने हुकूमत में बैठे हुए लोगों के लिए किस तरह मत दिया और इस तरफ मेरे साथ बैठने वाले हमारे साथियों के लिए किस तरह दिया। भारतीय जनता पार्टी और उनके मित्र पक्ष के जो आंकड़े मेरे सामने आए, वे यह हैं कि उनको 37 प्रतिशत के आस-पास वोट पड़े और कांग्रेस और उनके साथी, युनाइटेड फ्रंट और उनके साथियों को मिलाकर 55 प्रतिशत से ज्यादा वोट